NAPOLEON BONAPARTE

PAGE NO: 01
DATE:

FOR- U.G. PART-II, PAPER- IV

नेपोलियन का आरम्भिक जीवन एवं उदय:

नेपोलियन बोनापार्ट का जन्म 15 Aug. 1769 को मध्यमवर्गीय इतालवी परिवार में 'कोर्सिका द्वीप' के अजाक्सियो (Ajaccio) नामक नगर में हुआ था। इसकी माता का नाम 'मेरी लेटीजिया रेमोलिनो' तथा पिता का नाम 'चार्ल्स मेरी बोनापार्ट' था। जन्म के समय कोर्सिका द्वीप जेनोआ के अधीन था जिसे आगे चलकर फ्रांस को बेच दिया गया। फलत: फ्रांस के विरुद्ध वहाँ असंतोष व्याप्त था। नेपोलियन की आरम्भिक शिक्षा पेरिस की सैन्य अकादमी से सम्पन्न हुई। नेपोलियन इटली के कुलीन परिवार से संबंधित था, अत: लुई XVI ने भी उसकी आर्थिक सहायता की थी। वह इतिहास, भूगोल, राजनीति, गणित तथा दर्शनशास्त्र के अध्ययन का प्रेमी था। वह रूसो से काफी प्रभावित था। 1785 में 16 वर्ष की अवस्था में वह सेना (तोपखाना) में वह द्वितीय लेफ्टिनेंट के पद पर नियुक्त हुआ। उसे फ्रांस से घृणा थी और वह प्राय: कोर्सिका को मुक्त करने का स्वप्न देखता था। 1789 में फ्रांस के विरुद्ध कोर्सिका-निवासियों ने स्वतन्त्रता संग्राम छेड़ दिया जिसमें नेपोलियन ने भाग लिया था, किंतु 30 Nov 1789 को राष्ट्रीय सभा ने कोर्सिका उपनिवेश का अंत कर उसे फ्रांस के अधीन एक प्रांत बना दिया। इसके

Scanned with CamScanner

पश्चात इसे फ्रांस के अन्य प्रांतों के समान अधिकार मिल गये। 1793 में इसने जैकोबिन दल की सदस्यता ग्रहण की।

28 Aug 1793 में अंग्रेजी जहाजी बेड़े ने फ्रांस के ऊपर आक्रमण कर टूलों (Toulon) पर अधिकार कर लिया किंतु नेपोलियन ने टूलों पर आक्रमण कर अंग्रेजों को भगा दिया। यह उसके जीवन की महत्वपूर्ण घटना थी। रोब्सपियर ने उसकी काफी प्रशंसा की तथा उसे ब्रिगेडियर-जनरल बना दिया

1795 ई. में जब पेरिस की भीड़ ने नेशनल कन्वेंशन का जब घेराव किया तब नेपोलियन ने कन्वेंशन की रक्षा कर अपनी प्रतिभा का पूरा परिचय दिया, फलतः उसे 'मेजर जनरल' बनाया गया तथा सेना का मुख्य सेनापति के रूप में इटली पर आक्रमण का जिम्मा सौंपा गया। इसी समय नेपोलियन ने सेनापति बोआर्ने की विधवा जोसेफीन बोआर्ने (Josephine Beauharnis) से विवाह किया। इसी समय नेपोलियन ने Directory के अध्यक्ष बारो के साथ अपना निकट संबंध बनाया।

1796 ई. में नेपोलियन ने इटली का अभियान कर 'नीस तथा सेवॉय' का क्षेत्र प्राप्त किया और युद्ध का खर्च उसने विजित प्रदेशों से निकालना शुरू किया।

1797 ई. में इटली अभियान के बाद आस्ट्रिया का

अभियान किया तथा उसे पराजित कर 17 Oct. 1797 को कैम्पो फॉर्मियो (Campo Fornio) की संधि की। इस संधि के तहत आस्ट्रिया ने बेल्जियम फ्रांस को दे दिये और राइन नदी के बाये किनारों का समुचा क्षेत्र फ्रांस के अधीन स्वीकार कर लिया गया। इटली में लोम्बार्डी के ऊपर भी फ्रांस का आधिपत्य स्वीकार कर लिया गया। बदले में फ्रांस ने आस्ट्रिया को वेनिस राज्य के इस्ट्रिया तथा डालमेशिया प्रदान किये। इसप्रकार इस संधि द्वारा नेपोलियन ने यूरोपीय राज्यों के मानचित्रों को बदलने का प्रथम प्रयास किया जो आगे भी चलता रहा।

Dec. 1797 ई. को नेपोलियन जब फ्रांस लौटा तो उससे डायरेक्टरो को भय हुआ। उन्होंने नेपोलियन से इंग्लैंड जीतने को कहा ताकि वह फ्रांस से बाहर रह सके। जिस समय वह फ्रांस लौटा उस समय वह पर्याप्त शक्तिशाली हो गया था। यदि वह चाहता तो डायरेक्टरी शासन का अंत कर सकता था, परंतु उसने ऐसा नहीं किया। नेपोलियन जानता था कि इंग्लैंड की समृद्धि उसके पूर्वी उपनिवेशों विशेषकर भारत के व्यापार के कारण थी। ऐसे में मिस्त्र में फ्रांसीसी सत्ता कायम हो जाये तो भूमध्यसागर फ्रांसीसी झील बन जायेगा। तब इंग्लैंड के व्यापार को क्षति पहुंचाकर वह इंग्लैंड को पराजित कर सकेगा। इस उद्देश्य से वह मिस्त्र का अभियान मई 1798 में कर काहिरा को जीता। (पिरामिडो का युद्ध)

Scanned with CamScanner

इसी समय दो ऐसी महत्वपूर्ण घटना घटी जिससे नेपोलियन का उद्देश्य प्रभावित हुआ। 1 Aug 1798 को अंग्रेजी सेनापति नेल्सन ने अबूकर की खाड़ी में फ्रांसीसी बेड़े को पूर्णतया नष्ट कर दिया (नील नदी का युद्ध)। इस युद्ध के फलस्वरूप नेपोलियन का फ्रांस से संबंध टूट गया। इसी समय टर्की ने फ्रांस से युद्ध की घोषणा कर दी। मिस्र में घिर जाने के बाद नेपोलियन ने 1799 ई. में सीरिया विजय का भी असफल प्रयास किया।

नेपोलियन का मिस्र विजय का सांस्कृतिक महत्व अधिक है। वह अपने साथ मिस्र में अनेक विद्वान, कलाकार, भूतत्ववेत्ता तथा कवि ले गया था जिसकी संख्या 175 थी। नेपोलियन ने वहाँ के भग्नावशेषों की खोज कराई जिसके आधार पर मिस्र दर्शन (The Description of Egypt) की रचना की गई। उसने मिस्रवालों को नवीन शासन प्रणाली से परिचय कराया तथा वहाँ रहकर उसके चिकित्सकों ने पूर्वी देशों के रोग निदान को सीखा।

इसी बीच नेपोलियन ने दो कारणों से फ्रांस लौटना चाहा। उसे सूचना मिली कि इंग्लैंड ने आस्ट्रिया तथा रूस से मिलकर फ्रांस के विरुद्ध यूरोपीय राजाओं का दूसरा गुट बना लिया है तथा उसमें नेपल्स, पुर्तगाल तथा टर्की राज्य भी सम्मिलित हैं। इसका इटली से फ्रांसीसी सेनाएं निकाल दी गई हैं और फ्रांस के

ऊपर आक्रमण का भय है। उधर आस्ट्रिया की सेना फिर से इटली विजीत कर राजतंत्र की स्थापना कर ली इससे डायरेक्टरी शासन की दुर्बलता सामने आ गई। फ्रांस के अंदरूनी हालात भी अच्छे न थे। उग्रवादी नेता बाबूफ ने डायरेक्टरी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया था। फ्रांस की जनता डायरेक्टरी शासन से निराश हो चुकी थी। नेपोलियन को अपनी महत्वकांक्षा पूरा करने का स्वर्णिम अवसर दिखा। नेपोलियन ने 21 Aug 1799 को अपने साथ कुछ विश्वस्त लोगों को लेकर वह फ्रांस की ओर प्रस्थान किया। उसने अपने प्रस्थान को गुप्त रखा तथा विश्वस्तम् सेनापति क्लेबर को पत्र द्वारा मिस्री सेना संचालन का भार सौंपते हुये कूच किया। अपनी ही परेशानियों मे डूबी फ्रांसीसी जनता ने उसका उल्लासपूर्ण स्वागत किया। लोग फ्रांस को निराशाजनक स्थिति से उबारने की आशा नेपोलियन से कर रहे थे। नेपोलियन के लिये यह "नाशपाती के पकने" जैसा था। सर्वत्र जनता में चर्चा थी कि फ्रांस का रक्षक (Saviour of France) आ गया है।

9 Nov. 1799 को नेपोलियन ने कुछ डायरेक्टरों (सियेस) के साथ षड़यंत्र कर 500 की परिषद तथा महल को घेर लिया और सैन्य टुकड़ियों की मदद से सभा से अपने सारे विरोधियों को निकाल दिया एवं निदेशकों से जबरन इस्तीफा ले लिया। इस प्रकार 10 Nov. को डायरेक्टरी शासन

का अंत कर दिया गया तथा उसके स्थान पर तीन कॉन्सलों (Consuls) की नियुक्ति की गई – (1) नेपोलियन (2) सिये (3) ड्यूको। इनमें नेपोलियन प्रधान कॉन्सल था। इस प्रकार देश में कान्सुलेट (Consulate) शासन की स्थापना हुई और डायरेक्टरी शासन का अंत हुआ। तीनों कॉन्सलों को मिलकर देश का शासन संचालन करना था तथा एक नवीन संविधान बनाना था। फ्रांस के इतिहास में यह 'रक्तहीन क्रांति' (Coupd'etat - Change of state) के नाम से विख्यात है। वास्तव में धोखे तथा शक्ति से नेपोलियन ने फ्रांस की सत्ता पर अधिकार कर लिया था।

Scanned with CamScanner